

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, लूका-प्रेरितों के कार्य का धर्मशास्त्र सत्र 5, क्राइस्टोलॉजी और मोक्ष, द न्यू कम्युनिटी

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 5 है, धर्मशास्त्र, क्राइस्टोलॉजी और मोक्ष, नए समुदाय पर डेरल बॉक।

आइए प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपको परमेश्वर के वचन के लिए धन्यवाद देते हैं। ल्यूक और नए नियम में उनके योगदान के लिए धन्यवाद। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें प्रकाशित करें, ताकि हम उनके संदेश को बेहतर ढंग से समझ सकें और हम इस पर ऐसे तरीके से प्रतिक्रिया कर सकें जो आपको प्रसन्न करे। हमें आशीर्वाद दें और दूसरों की मदद करें, हम यीशु मसीह, हमारे प्रभु के माध्यम से प्रार्थना करते हैं, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हम लूका के लेखन में मसीह-विद्या और उद्धार का अध्ययन कर रहे हैं और हमने परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करना शुरू कर दिया है।

राज्य सांसारिक है। यीशु एक दाऊद के वंश के रूप में पृथ्वी पर शासन करेगा और सभी पर अपनी प्रभुता का प्रयोग करते हुए पृथ्वी को पूर्ण रूप से मुक्ति दिलाएगा। ऐसी आशा सबसे अधिक दृढ़ता से लूका 1:32-33, 46-55, 69-75 में व्यक्त की गई है।

प्रेरितों के काम 1:11 और 3:18-21 की टिप्पणियों में युगांतशास्त्रीय प्रवचनों से पता चलता है कि भविष्य की आशा वर्तमान उद्घाटन में समाप्त नहीं हुई है, बल्कि जीवित है, जो पुराने नियम की जड़ों से जुड़ी हुई है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है और अपने सभी वादों को पूरा करता है, यहाँ तक कि इस्राएल से किए गए वादों को भी। हम वहाँ डॉ. बॉक के युगवाद को थोड़ा सा देखते हैं।

हालाँकि, आध्यात्मिक उद्धार भी उसका है। यीशु उगता हुआ सूरज है जो अंधकार में पड़े लोगों पर चमकता है और उन्हें शांति के मार्ग पर ले जाता है, लूका 1:78-79। आत्मा का वादा, लूका 3:15-18, 24-49, प्रेरितों के काम 1:8, और पापों की क्षमा की आशा, लूका 24:47, यहाँ केंद्रीय हैं।

दुष्टात्माओं और अन्य शक्तियों पर यीशु के चमत्कारों से पता चलता है कि वह ऐसे वादों को साकार करने में सक्षम है। राज्य के सबसे स्पष्ट विषय जो उसकी उपस्थिति से लाभान्वित होंगे, वे शिष्य हैं, लूका 18:26-30। उद्धार के सभी लाभ उनके हैं, लेकिन संभावित लाभार्थी मौजूद हैं।

उदाहरण के लिए, जो कोई भी राज्य में प्रवेश करता है, लूका 13:23-30, लूका 14:16-24। हालाँकि, ऐसे अनिच्छुक विषय भी हैं जो एक दिन यीशु के शासन की वास्तविकता का सामना करेंगे। इच्छुक, उत्तरदायी विषय हैं, संभावित विषय हैं, और अनिच्छुक, प्रतिरोधी विषय हैं।

हालाँकि, ऐसे अनिच्छुक विषय हैं जो एक दिन यीशु के शासन की वास्तविकता का सामना करेंगे और अब भी उसके प्रति जवाबदेह हैं, ल्यूक 19:27, ल्यूक 21:24-27, अधिनियम 3:20-26,

अधिनियम 10:42, अधिनियम 17:30-31. परन्तु मेरे ये शत्रु, प्रेरितों के काम 19:27, जो नहीं चाहते कि मैं उन पर राज्य करूं, उन्हें यहां लाकर मेरे साम्हने मार डालो। यह एक दृष्टांत है, लेकिन यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि अपने शत्रुओं के प्रति यीशु का रवैया न्याय और क्रोध का था।

इस प्रकार, हर किसी की कुछ जवाबदेही होती है और उसका राजा के साथ और इसलिए, राज्य के साथ कुछ संबंध होता है। मुद्दा यह है कि वे कहां फिट बैठते हैं। पवित्र आत्मा।

मुक्ति के केंद्रीय स्वरूप के रूप में आत्मा वादा किए जाने की स्थिति से आगे बढ़ती है, लूका 3:15-18, एक गवाही देने वाला, यीशु के लिए समर्थक बनने की ओर, लूका 3:21, लूका 4:16-18। पूर्ण वादा अंततः बाद में आता है जब आत्मा सभी विश्वासियों पर उतरती है, अधिनियम 2:1-13 पन्तेकुस्त पर। ल्यूक इस घटना को एक संकेत के रूप में समझाता है कि नया युग आ गया है, प्रेरितों 2:14-21, जोएल 2:28-32।

इसलिए, आत्मा, महान पुत्र के माध्यम से पिता का उपहार है। वह ऊपर से शक्ति, या सक्षमता है, ल्यूक 24:49, अधिनियम 2:30-36, अधिनियम 10:44-47, अधिनियम 11:15-16, अधिनियम 15:8। आत्मा की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि यीशु पुनर्जीवित हो गए हैं और यीशु अपने नए समुदाय को ईश्वर की ओर से, ईश्वर के दाहिने हाथ से निर्देशित करते हैं।

ल्यूक ने थियोफिलस को आश्चस्त किया कि यद्यपि मसीहा मर चुका है और अनुपस्थित प्रतीत होता है, वह उसके द्वारा भेजे गए आत्मा के उपहार और उपस्थिति में मौजूद है। पुनरुत्थान और आरोहण. आत्मा के प्रावधान का केंद्र यीशु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण है।

लूका अकेले ही स्वर्गारोहण का उल्लेख करता है और उसे विकसित करता है। स्वर्गारोहण लूका 24 और प्रेरितों के काम 1 को जोड़ता है और प्रेरितों के काम 2:23-24, आयत 30-36, प्रेरितों के काम 3:14-15 और 21, प्रेरितों के काम 4:10-12 और प्रेरितों के काम 5:30 में समझाया गया है। एक उठाया हुआ उद्धारकर्ता वह है जो शासन कर सकता है और अपने वादे को पूरा कर सकता है।

वह एक ऐसा व्यक्ति है जो क्षमा कर सकता है और उस क्षमा के संकेत के रूप में आशीर्वाद दे सकता है। प्रेरितों के काम 2:21, 4:12, और 10:43। यीशु का अधिकार सक्रिय है और उन लोगों में प्रदर्शित होता है जो उसके नाम पर काम करते हैं।

प्रेरितों के काम में कई जगह। पहला प्रेरितों के काम 2:38 है, और आखिरी प्रेरितों के काम 19:5 है, और बीच में आधा दर्जन और जगहें हैं। इस प्रकार, स्वर्गारोहण से पता चलता है कि वह प्रभु है।

यीशु की शिक्षा और कार्य में उद्धार। उद्धार में आशा में भागीदारी, राज्य का अनुभव, क्षमा प्राप्त करना और आत्मा द्वारा सक्षम होना शामिल है। यीशु खुद को उद्धार लाने वाले के रूप में प्रकट करते हैं, जबकि उनकी शिक्षा और कार्य बताते हैं कि वह अपनी सेवकाई के माध्यम से क्या लाने की उम्मीद करते हैं।

वह एक शिक्षक और चमत्कार करने वाला व्यक्ति है। लूका 4:14 और 15. लूका 4:31, 32 और 44.

उनकी शिक्षा राज्य की पेशकश पर केन्द्रित है। राज्य के आगमन को जुबली के संदर्भ में मुक्ति और उपचार के रूप में चित्रित किया गया है। लूका 4:16-21, लैव्यव्यवस्था 25:10, यशायाह 61:1-2।

लेकिन इसमें आशीर्वाद का अनुभव करने के परिणामस्वरूप नैतिक सम्मान का आह्वान भी शामिल है। लूका 6:20-49। दृष्टांत उसी संयोजन को दिखाते हैं।

कुछ, जहाँ भोजन के दृश्य प्रमुख हैं, परमेश्वर की योजना से संबंधित हैं। प्रेरितों के काम 13:6-9 और प्रेरितों के काम 13:23-40. प्रेरितों के काम 14:16-24.

प्रेरितों के काम 29:18. ये पद न केवल उद्धार के आनन्द को दर्शाते हैं, बल्कि भविष्य की भोज-भात की तस्वीर भी दिखाते हैं, जिसे समुदाय अब बिना किसी जाति-भेद के प्राप्त कर सकता है। प्रेरितों के काम 10, 11 और 15.

इस प्रकार, परमेश्वर के लोगों के बीच एकता होनी चाहिए। एकता से परे नैतिक जीवन जीने का आह्वान है। इसमें परमेश्वर के साथ संबंध, मिशन और नैतिक सम्मान शामिल है।

प्रेम, नम्रता, सेवा और धार्मिकता को रिश्तों पर हावी होना चाहिए, जैसा कि कई दृष्टांतों से पता चलता है। लूका 10:25-37, 11:5-8, 14:1-12, 12:35-48, 15:1-32, 16:1-8, 19:31, 18:32, 19:33, 19:34, 19:35, 19:36. 18:1-8, और 19:11-27.

यीशु सिर्फ लोगों को स्वर्ग ले जाने के लिए नहीं आए थे, बल्कि उन्हें अपने जीवन में परमेश्वर की परिवर्तनकारी गतिविधि को जानने में सक्षम बनाने के लिए भी आए थे। इस प्रकार, समुदाय परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। यही कारण है कि यीशु की शिक्षा में प्रतिबद्धता इतनी प्रमुख है। लूका 9:21-26। लूका 9:57-62, लूका 14:25-35 और लूका 18:18-30।

क्रॉस। यीशु के कार्य और शिक्षा का सर्वेक्षण करते हुए, हमने अब तक क्रॉस के बारे में बहुत कम कहा है, क्योंकि लूका की महिमा की प्रस्तुति क्रॉस से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

मैं फिर से दोहराता हूँ, यीशु के महिमामंडन की लूका की प्रस्तुति क्रूस से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है। कुछ लोग यीशु के कार्य के लिए किसी उद्धारक कार्य को नकार देंगे, और तर्क देना पसंद करेंगे कि यीशु और उनकी मृत्यु केवल एक उदाहरण है। दबाव में एक चर्च के लिए अनुकरणीय तत्व मौजूद हैं, लेकिन यीशु की मृत्यु के बारे में यह नैतिक दृष्टिकोण बहुत सीमित है।

टायसन ने 1986 में लिखी अपनी किताब में इस बात पर ज़ोर दिया कि किस तरह यीशु की मृत्यु का चित्रण यहूदी धर्म और नए मार्ग के बीच संघर्ष को दर्शाता है। नेता यीशु के अधिकार के दावों पर बहस करते हैं, जबकि ल्यूक तर्क देते हैं कि यीशु की मृत्यु इस संघर्ष का एक आवश्यक

परिणाम है। हालाँकि क्रूस ल्यूक के लिए पॉल की तुलना में कम महत्वपूर्ण है, लेकिन ल्यूक की शिक्षाओं में क्रूस धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है।

इसका सिर्फ नैतिक या ऐतिहासिक कार्य नहीं है। यीशु धर्मी पीड़ित हैं, लूका 22 और 23। हालाँकि, दो ग्रंथ विशेष रूप से यीशु की मृत्यु को परिभाषित करते हैं।

यीशु की मृत्यु परमेश्वर के साथ नई वाचा का उद्घाटन करती है, लूका 22:20। लूका के प्रभु भोज की स्थापना के समय, हम पढ़ते हैं, इसी तरह, यीशु ने भोजन के बाद प्याला लिया, और कहा, यह प्याला जो तुम्हारे लिए उंडेला गया है, मेरे लहू में नई वाचा है। उनकी मृत्यु नई वाचा का उद्घाटन करती है, जिसकी भविष्यवाणी, उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 31:31 से 34 में सबसे स्पष्ट रूप से की गई है।

और उसका खून कलीसिया को खरीदता है, प्रेरितों के काम 20:28. मीलेटस में इफिसियन बुजुर्गों को दिए गए अपने उपदेश में, यीशु कहते हैं, मैं तुमसे सच कहता हूँ, यह यूहन्ना में नहीं है, न ही यह लूका में है। ओह!

20:28. वह प्राचीनों से कहता है, अपने आप पर और पूरे झुंड पर ध्यान दो, जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष नियुक्त किया है, ताकि तुम परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल करो। कुछ पांडुलिपियों में प्रभु लिखा है, जिसे उसने अपने लहू से प्राप्त किया। परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करता है, जिसे उसने अपने लहू से प्राप्त किया।

प्रभु के चर्च की देखभाल करता है, जिसे उसने अपने खून से प्राप्त किया है। यह प्रभु भोज की कहावत के साथ-साथ वे दो स्थान हैं जहां ल्यूक स्पष्ट रूप से यीशु के क्रूस के बारे में बात करता है। यहाँ, यीशु की मृत्यु एक मुक्ति है।

वह खरीदता है, वह चर्च को प्राप्त करता है, अपनी हिंसक मौत से, अपने खून से। और उनका कहना है कि बॉक वास्तव में सतर्क है। यीशु की मृत्यु के साथ हुई वाचा के उद्घाटन और सामाजिक लेन-देन का सारांश देने के बाद, वह कहते हैं कि दो अन्य छवियाँ इस दृष्टिकोण को पुष्ट करती हैं।

बरअब्बा के स्थान पर यीशु का प्रतिस्थापन पापियों के स्थान पर यीशु के प्रतिस्थापन को चित्रित करता है, खासकर जब से सभी अधर्मी चुनाव में भागीदार होते हैं, ल्यूक 23:13 से 25। क्रूस पर चोर को स्वर्ग की पेशकश यीशु की मृत्यु के बावजूद जीवन प्रदान करने की क्षमता को चित्रित करती है, ल्यूक 23:36 से 49। तो, ये क्रॉस के स्पष्ट संदर्भ नहीं हैं, लेकिन वे हैं, वे हैं, वे योगदान करते हैं, वे उस विषय में योगदानकर्ता हैं।

यीशु द्वारा बरअब्बास के स्थान पर रखे गए लोगों को पापियों के स्थान पर रखा जाना दर्शाता है। और यीशु द्वारा चोर से वादा करना कि आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे, यह दिखाता है कि क्रूस पर भी वह अनंत जीवन की गारंटी देने में सक्षम है। चमत्कार।

यीशु की प्रामाणिकता न केवल पुनरुत्थान में बल्कि चमत्कारों में भी आती है, जो नए युग के आगमन को दर्शाते हैं, लूका 7:22 और प्रेरितों के काम 2:22 से 24। चमत्कारी उपचार यीशु के अधिकार के दायरे को प्रदर्शित करता है। वह बीमारों को ठीक करता है, दुष्टात्माओं को बाहर निकालता है, और बुखार, कोढ़, लकवा, सूखे हाथ, मिर्गी, जलोदर, अंधापन, रक्तस्राव और बहरेपन को ठीक करता है।

वह मृतकों को पुनर्जीवित करता है और प्रकृति पर अधिकार करता है। यीशु का कार्य उसके व्यक्तित्व और कार्य की गवाही देता है। उसके शिष्य भी प्रेरितों के काम में इनमें से कुछ कार्य करते हैं, जो यह प्रदर्शित करते हैं कि ऐसी प्रामाणिकता जारी है, प्रेरितों के काम 3:6 और 16, और यीशु का अधिकार भी जारी है।

प्रेरितों के काम 1:1 को याद करो, थिओफिलस, मैंने अपने पिछले काम में तुम्हें लिखा था कि यीशु ने क्या करना और सिखाना शुरू किया, जिस दिन तक वह उठा लिया गया। इसका तात्पर्य यह है कि अब प्रेरितों के काम में, लूका लिखता है कि यीशु ने उठाए जाने के बाद क्या करना और सिखाना जारी रखा। स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर, वह अपने प्रेरितों और उनके शिष्यों के माध्यम से आत्मा के द्वारा ऐसा करता है।

यीशु और उद्धार। हालाँकि लूका द्वारा यीशु का चित्रण मूल रूप से उसके अधिकार के बारे में है, यीशु वादा भी लेकर आता है। उद्धार राज्य का उद्घाटन करता है, पापी को मुक्ति देता है, पाप को क्षमा करता है, आत्मा प्रदान करता है, और राज्य के भविष्य के समापन के संदर्भ में प्रतिबद्ध और वफादार जीवन जीने का आह्वान करता है।

परमेश्वर की सभी वाचा संबंधी प्रतिज्ञाएँ यीशु द्वारा आरंभ की गई हैं। अब्राहमिक प्रतिज्ञाएँ पूरी हुई हैं, प्रेरितों के काम 3:22 से 26। दाऊद की आशा पूरी हुई है, लूका 1:31 से 33, लूका 1: 69. प्रेरितों के काम 2:25 से 36. परमेश्वर की सभी वाचा संबंधी प्रतिज्ञाएँ पूरी हो चुकी हैं।

दूसरा है आत्मा की आशा जो नए युग और नई वाचा के आगमन से जुड़ी है। लूका 22:20. प्रेरितों के काम 2:14 से 21.

थिओफिलस को आश्चस्त होना चाहिए कि यीशु इन वादों को पूरा कर सकता है और करता भी है। लेकिन इस तरह के आशीर्वाद में कौन भाग लेता है? सदस्य एक दूसरे से कैसे संबंध रखते हैं, और समुदाय के सदस्यों का कार्य क्या है? नया समुदाय कौन बनाता है, और यह क्या होना चाहिए? लूका नए समुदाय की सामग्री और कार्य पर क्राइस्टोलॉजी के प्रभाव को कैसे देखता है? इन सवालों के जवाब लूका के नए समुदाय, चर्च के चित्रण में पाए जाते हैं। नया समुदाय।

यीशु का नया समुदाय सुसमाचार में पूरी तरह से संगठित इकाई नहीं है। यह दूसरी सदी के नए कैथोलिक धर्म की सभी विशेषताओं को प्रदर्शित नहीं करता है। 12 प्रेरितों और लूका 10 के 72 प्रेरितों के अलावा, कुछ समय के लिए कोई औपचारिक संरचना नहीं है।

बल्कि, जो लोग प्रेरितों के काम के नए समुदाय बन जाते हैं उन्हें शिष्य कहा जाता है। सुसमाचार में, यह समूह ज़्यादातर यहूदी है। लेकिन कुछ संकेत हैं कि यीशु के कार्यक्रम का लाभ सामरियों और गैर-यहूदियों तक भी पहुँच सकता है।

लूका 3:4 से 6. लूका 7:1 से 10. लूका 20:15 से 16 और लूका 24:47.

हालाँकि प्रेरितों के काम में नस्लीय विषय केंद्रीय है, लेकिन लूका के सुसमाचार से पता चलता है कि संदेश समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों तक पहुँच रहा है, जो उद्धार के लाभार्थी हैं। लूका ने सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों और महिलाओं द्वारा संदेश के स्वागत पर ध्यान केंद्रित किया है। लूका ने गरीबों, पापियों और कर संग्रहकर्ताओं का वर्णन किया है।

लूका का ध्यान भौतिक और आध्यात्मिक रूप से गरीब लोगों पर है। यह आध्यात्मिक तत्व लूका 1:50 से 53 और 6:20 से 23 में स्पष्ट है, जहाँ गरीब और विनम्र लोग, दुर्व्यवहार किए गए भविष्यवक्ताओं की तरह, परमेश्वर की वाचा के लाभार्थी हैं। गरीब या अस्वीकृत लोगों का उल्लेख कई ग्रंथों में किया गया है।

लूका 1:46 से 55, 4:18, 7:22, 14:13, इत्यादि। पापी भी सुसमाचार के विशेष पात्र हैं लूका 5:27 से 32।

लूका 15:1 और 2. लूका 19:7. कर वसूलने वालों को भी आशा दी जाती है। उन्हें नापसंद किया जाता है क्योंकि उन्हें रोमी कर वसूलने के लिए, कभी-कभी बहुत ज़्यादा कर वसूलने के लिए, इस्राएल के प्रति गद्दार माना जाता है। लेकिन यीशु दिखाते हैं कि वे परमेश्वर की आशीष में प्रवेश कर सकते हैं।

लूका 5:27 से 32, 7:34, 18:9 से 14, और 19:1 से 10 जक्कई का उदाहरण है। अंत में, लूका महिलाओं की जवाबदेही को दर्शाता है। लूका 7:36 से 50, 8:1 से 3, और 48:10, 38 से 42, 13:10 से 17, 24:1 से 12।

सिर्फ महिलाएँ ही नहीं, बल्कि विधवाएँ भी समाज में सबसे कमज़ोर लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। लूका 2:37, 4:25 और 26, 7:12, 18:3 और 5, 20:47, 21:2 और 3. चाहे दृष्टांत में हो या उदाहरण के द्वारा, ये महिलाएँ यीशु के संदेश के प्रति संवेदनशील हैं। हालाँकि वे पहली सदी के समाज के हाशिये पर हैं, लेकिन वे लूका की कहानी के बीच में हैं।

अक्सर उन्हें पुरुषों के साथ जोड़ा जाता है। लूका 2:25 से 28, 15:4 से 10, 17:34, 35. प्रेरितों के काम 21:9 और 10, कुछ संदर्भों का उल्लेख करने के लिए।

यह स्पष्ट संकेत है कि सुसमाचार दोनों लिंगों के लिए है। लूका द्वारा लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम दोनों में महिलाओं और पुरुषों को एक साथ जोड़ना दर्शाता है कि दोनों लिंग सुसमाचार के उचित प्राप्तकर्ता हैं। संक्षेप में, इस नए समुदाय की संरचना कोई सीमा नहीं जानती।

यह संदेश सभी के लिए उपलब्ध है, लेकिन खास तौर पर उन लोगों के लिए जो समाज में उजागर हैं और जो परिणामस्वरूप अक्सर आशा और ईश्वर पर निर्भरता के संदेश का जवाब देने के लिए सबसे उपयुक्त हैं। प्रतिक्रिया के चित्र। लूका संदेश के प्रति प्रतिक्रिया का वर्णन करने के लिए तीन शब्दों का उपयोग करता है।

पश्चाताप, मुड़ना और विश्वास। पश्चाताप, मेटानोइया और पश्चाताप, मेटानोइया, की जड़ें पुराने नियम में हैं। लूका 11:32 और 24, 43 से 47, जहाँ हिब्रू समतुल्य, मुख्य रूप से शूव, मुड़ने का उल्लेख करते हैं।

ग्रीक में इस शब्द का संबंध मन के परिवर्तन से है। मुद्दा यह है कि पश्चाताप में परिप्रेक्ष्य का पुनर्मूल्यांकन, एक नया दृष्टिकोण शामिल होता है। मैं जोड़ना चाहूंगा, विशेषकर पाप के संबंध में।

ईश्वर की योजना से निपटते समय, इसका अर्थ है उस योजना को एक नए तरीके से देखना और पाप से ईश्वर की ओर मुड़कर स्वयं को उसकी ओर उन्मुख करना। ल्यूक प्रदर्शित करता है कि पश्चाताप का फल स्वयं को ठोस रूप से व्यक्त करता है। ल्यूक 3:10 से 14.

पश्चाताप स्वयं को जीवन में व्यक्त करता है, विशेषकर इस बात से कि कोई व्यक्ति दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है। ल्यूक ने पश्चाताप की चार तस्वीरें चित्रित कीं। एक, एक बीमार रोगी जिसे चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता होती है और वह पूरी तरह से डॉक्टर के कौशल पर निर्भर होता है, मदद के लिए चिकित्सक के पास आता है।

इसलिए, जो पश्चाताप करता है वह आध्यात्मिक आशीर्वाद और उपचार के लिए भगवान के पास आता है। ल्यूक 5:31 और 32. दो, अपने पिता के पास लौटने में उड़ाऊ के कृत्य का पश्चाताप दर्शाता है कि पश्चाताप कैसे कोई दावा नहीं करता है बल्कि पूरी तरह से उस व्यक्ति की दया पर निर्भर करता है जिससे अनुरोध किया गया है।

ल्यूक 15:17 से 21 तक। पश्चाताप पाप के बारे में दृष्टिकोण में बदलाव है क्योंकि कोई देखता है कि केवल भगवान और उसकी दया ही राहत प्रदान कर सकती है। ल्यूक के लिए पश्चाताप की केंद्रीयता ल्यूक 24:47 में इसके सारांश द्वारा इंगित की गई है।

उद्धरण, पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप, करीबी उद्धरण, का अर्थ है कि कोई व्यक्ति यीशु के माध्यम से भगवान की दया चाहता है क्योंकि वह अपनी शर्तों पर भगवान के पास जाता है, क्षमा किए जाने की आवश्यकता को पहचानता है और केवल भगवान ही क्षमा प्रदान कर सकता है। तीन, तीसरा उदाहरण, ल्यूक के सुसमाचार में पश्चाताप की तीसरी तस्वीर। कर संग्रहकर्ता ईश्वर के प्रति इस प्रकार का दृष्टिकोण दिखाता है, हालाँकि वहाँ पश्चाताप शब्द का उपयोग नहीं किया जाता है।

लूका 18:9 से 14. चौथा, जक्कई का जवाब भी शिक्षाप्रद है। लूका 19:1 से 10.

प्रेरितों के काम में भी यह शब्द महत्वपूर्ण है। प्रेरितों के काम 5:31, 11:18, 13, 24, 19:4, 20:21, 26:20। क्रिया का प्रयोग प्रेरितों के काम 5:31, 11:18 में भी उचित प्रतिक्रिया, पश्चाताप को इंगित करने के लिए किया गया है।

लूका 11:32, 13:3 और 5, 15:7 और 10, 16:30. प्रेरितों के काम 2:38, 3:19, 17:30, 26:20. शब्द टर्न, एपिस्ट्रफो, मुख्य रूप से प्रेरितों के काम में दिखाई देता है, लेकिन सुसमाचार में शायद ही दिखाई देता है।

लूका 1:17, 17:40, 22:33, 34, 35, 36, 37, 38, 32. प्रेरितों के काम 3:19, 9:35, 11:21, 14:15, 15:19, 26:18 से 20, और 28:27. हालाँकि, यह शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मौलिक दिशा में परिवर्तन, मनमुटाव को उलटने की तस्वीर पेश करता है और यह दर्शाता है कि पश्चाताप के साथ क्या होता है।

अधिनियम 26 विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पश्चाताप, बारी और विश्वास की तीन प्रमुख अवधारणाएँ एक साथ दिखाई देती हैं और एक दूसरे से संबंधित हैं। विश्वास पिस्टिस का भी वर्णन करता है, उन कार्यों का भी वर्णन करता है जो धारक को लाभ पहुंचाते हैं। विश्वास खुद को लकवाग्रस्त व्यक्ति के दोस्तों, ल्यूक 5:20, सेंचुरियन, ल्यूक 7:9 और यीशु का अभिषेक करने वाली पापी महिला, ल्यूक 7:47 से 50 के माध्यम से ठोस रूप से व्यक्त करता है।

सामरी कोढ़ी और अंधे व्यक्ति को भी यीशु पर विश्वास है कि वे उन्हें पूर्णता में लौटा देंगे, लूका 17:19, लूका 18:42। संक्षेप में, विश्वास विश्वास करता है, और इसलिए यह कार्य करता है। आस्था अधिनियम 3:16, 14:9, 15:9, 20, 21, 24, और 24:26 में भी खुद को ठोस रूप से व्यक्त करती है।

विश्वास के विभिन्न स्तर होते हैं। यह अल्पकालिक हो सकता है, लूका 8:12, या बढ़ा हुआ, लूका 8:50। अधिनियमों में, विश्वास की केंद्रीयता और इसकी गतिशील, चल रही गुणवत्ता को दिखाने के लिए प्रतिक्रिया देने वालों को कभी-कभी विश्वासी कहा जाता है, अधिनियम 5:14, अधिनियम 15:5। संक्षेप में, विश्वास यह मान्यता और अनुनय है कि ईश्वर के पास यीशु के माध्यम से देने के लिए कुछ है, अर्थात् क्षमा और वादे का आशीर्वाद।

व्यक्ति को सक्रिय रूप से विश्वास अपनाना चाहिए और प्रभु का नाम लेना चाहिए, प्रेरितों 2:21, रोमियों 10:13। नये समुदाय का आशीर्वाद. ल्यूक सुसमाचार में दिए गए आशीर्वाद, क्षमा या रिहाई के लिए विभिन्न शब्दों का उपयोग करता है, ल्यूक 1:77 और 3:3। लूका 4:18 और 24.

नए नियम में, अधिनियम 2:38, 5:31, 10:43, 13:38। जीवन, लूका 10:28, 12:15, और 21, 12:21। लूका 18:29 और 30.

शांति, ल्यूक 1:79, 10:5 और 6, अधिनियम 10:36। ईश्वर का राज्य, आत्मा का राज्य भी नए समुदाय का आशीर्वाद है, और हम पहले ही उनके बारे में बात कर चुके हैं। ये आशीर्वाद और जिस तरह से वादा किया गया है उससे पता चलता है कि ल्यूक का एजेंडा राजनीतिक नहीं है।

नतीजतन, मुक्ति पाठ, विशेष रूप से राजनीतिक वैचारिक आधार वाले या जो यीशु को एक राजनीतिक कार्यकर्ता में बदलने का प्रयास करते हैं, समर्थन की कमी है। यीशु ने रोम की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती नहीं दी। उन्होंने इसके ऊपर और इसके आसपास काम किया।

चर्च राज्य के खिलाफ़ या उसके साथ खड़ा नहीं है। चर्च को राज्य के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, ल्यूक 20:20 से 26। फिर भी, समुदाय की नैतिकता के सामाजिक निहितार्थ हैं।

लोगों के परिवर्तन का उदाहरण इस नए समुदाय में दिया जाना चाहिए, जो धर्मनिरपेक्ष संस्थाओं के साथ खड़ा है। इस नए समुदाय के लोग जो ईश्वर से प्रेम करते हैं, उन्हें समुदाय के लोगों की देखभाल करके अपना प्रेम प्रकट करना चाहिए, प्रेरितों के काम 4:32 से 38, और समुदाय के बाहर के पड़ोसियों की देखभाल करके, लूका 10:25 से 37। यदि कहीं भी सामाजिक चिंता और करुणा दिखाई देती है, तो यह इस उम्मीद में है कि नया समुदाय और सभी को आशीर्वाद और परिवर्तन का उसका संदेश, साथ ही समुदाय की उदारता, प्रेम और गतिविधि में ऐसी देखभाल की ठोस अभिव्यक्ति।

उद्धार के विरोधी, उन लोगों के विपरीत जो उत्तरदायी हैं, वे खड़े हैं जो नए समुदाय का विरोध करते हैं और उस पर दबाव डालते हैं। पारलौकिक स्तर पर, बुराई की आध्यात्मिक ताकतें प्रतिरोधी हैं, हालाँकि भगवान की योजना के सामने शक्तिहीन हैं। लूका 4:1 से 13, 33 से 37, लूका 8:26 से 39, 9:1, 10:1 से 14, और 18, 11:11, 11:14 से 26, और 22:3। लूका के लिए, भगवान के संघर्ष में न केवल मानव भक्ति को पुनः प्राप्त करना शामिल है, बल्कि बुरी ताकतों के प्रभावों को उलटना भी शामिल है।

मानवीय स्तर पर, समुदाय के लिए सबसे बड़ी बाधा जो विरोधी हैं, वे हैं शास्त्री, फरीसी और सद्दूकी, यानी यहूदी धर्म के धार्मिक नेतृत्व। जब यीशु ने पाप क्षमा करने का अधिकार होने का दावा किया और सब्त की परंपरा को चुनौती दी, तो उनका विरोध लगभग निरंतर हो गया। लूका 5:24, और 6:1 से 11।

इस अस्वीकृति की जड़ें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को जवाब देने से इनकार करने में निहित हैं। लूका 7 : 29 से 30, 21 से 8. विभिन्न भोजनों पर, उन्हें चेतावनी दी जाती है, लूका 7:36 से 50, 11:37 से 52, 14:1 से 24. यात्रा अनुभाग में, साथ ही यरूशलेम में भी, नेता यीशु की निंदा के केंद्र में हैं।

लूका 11:37 से 52, 12:1, 14:1 से 4, 16:14, 15, 24:24, 20:45 से 47. ब्रॉली ने सद्दूकियों को मुख्य विरोधियों के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है, जबकि फरीसी और शास्त्रियों को प्रेरितों के काम के आधार पर अधिक तटस्थ रूप से चित्रित किया गया है। उनके लिए, सद्दूकी और मुख्य पुजारी मसीह का विरोध करते हैं, जबकि फरीसी कम प्रतिरोधी हैं और चर्च के संदेश के प्रमुख पहलुओं को वैध मानते हैं, और वे पुनरुत्थान के लिए खड़े होकर चर्च के संदेश के प्रमुख पहलुओं को वैध मानते हैं।

अब, इसमें कोई संदेह नहीं है कि सद्कियों को अधिक नकारात्मक रूप से चित्रित किया गया है, लेकिन ल्यूक के ग्रंथों से यह स्पष्ट हो जाता है कि फरीसियों और शास्त्रियों की गंभीर आलोचना हो रही है, साथ ही संदेश को अस्वीकार करने के लिए भी। हालाँकि, कुछ अपवाद हैं, जैसे कि जाइरस, ल्यूक 8:41, और अरिमथिया के जोसेफ, ल्यूक 23:50 से 53। लेकिन यह ज्यादातर नेतृत्व है जो यीशु का विरोध करता है और उनके निधन की साजिश रचता है।

ल्यूक 6:11, ल्यूक 11:53 से 54, ल्यूक 20:19, ल्यूक 22:3 से 6, ल्यूक 22:52, 53, ल्यूक 23:3 से 5। हालाँकि, भीड़ की प्रतिक्रिया मिश्रित है। उन्हें यीशु में रुचि है, फिर भी उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया सतही और कभी-कभी अस्थिर होती है। संक्रमण ल्यूक 9 से 13, अध्याय 9 से 13 में होता है।

ल्यूक 12:49 से 15:24 तक यीशु उन्हें कई चेतावनियाँ देते हैं। वह इस पीढ़ी को धिक्कारता है, लूका 11:29 से 32। वह देश के विभिन्न शहरों को धिक्कारता है, लूका 10:13 से 16।

और वह राष्ट्र की गलती के बारे में कुछ दृष्टांत बताता है, लूका 13:6 से 9, 20:9 से 19। भीड़ की अंतिम प्रतिक्रिया राष्ट्र में अधिकांश लोगों की सामान्य प्रतिक्रिया का प्रतीक है। अस्वीकृति न्याय की चेतावनी लाती है, लेकिन ऐसी चेतावनियाँ क्रोध का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं।

वे भविष्यसूचक पश्चाताप को चित्रित करते हैं, क्योंकि यीशु उन लोगों के लिए रोते हैं जिन्हें वे चेतावनी देते हैं, लूका 19:41 से 44। वास्तव में, जब भीड़ बरअब्बास के लिए पूछती है तो वे यीशु की मृत्यु के लिए जिम्मेदार बन जाते हैं, लूका 23:18 से 25। यीशु न्याय के अंतिम भविष्यसूचक नोट में परिणामों की चेतावनी देते हैं, लूका 23:27 से 31।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्र यीशु को अस्वीकार करने के लिए उत्तरदायी है, प्रेरितों के काम 2:22 से 24, 3:14 से 26, 5:30 और 31। इस्राएल की प्रतिक्रिया दुखद है, कम से कम अभी के लिए। यह आशीर्वाद के लिए कतार में है, लेकिन दर्शन के दिन से चूक गया है, लूका 19:44।

अब अन्यजातियों का समय है, लूका 21:24। हालाँकि, इज़राइल ईश्वर की योजना से बाहर नहीं है, क्योंकि राष्ट्र के प्रति ईश्वर के वादे की विश्वसनीयता से इनकार नहीं किया जा सकता है। परन्तु इस्राएल तब तक उजाड़ है, जब तक वह मसीहा को स्वीकार नहीं करता, लूका 13:14।

ल्यूक 19:34, 35. अधिनियम 3:14 से 21. अधिनियमों में, राष्ट्र को फिर से चेतावनी दी गई है, यीशु के बारे में अपना मन बदलने और पश्चाताप करने के लिए, प्रेरितों 2:22 से 24, और प्रेरितों 5:27 से 32 तक।

ल्यूक पर यहूदी विरोधी भावना का आरोप लगाया गया है, लेकिन यह कठोर है। ल्यूक यह तर्क नहीं देता है कि नया समुदाय उन लोगों द्वारा सताया जाता है, ल्यूक यह तर्क देता है कि नया समुदाय उन लोगों द्वारा सताया जाता है जो आशा के संदेश का जवाब देने में विफल रहते हैं। यीशु और उनके शिष्य लगातार राष्ट्र को सुसमाचार प्रदान करते हैं और प्रस्ताव देते समय कष्ट सहते हैं।

शिष्य विभाजन पैदा नहीं करते, और वे यहूदी समुदाय में हिंसा नहीं लाते। जो लोग यीशु के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं उन्हें बाहर कर दिया जाता है, जैसा कि अधिनियमों के उत्पीड़न से पता चलता है और जैसा कि यीशु ने भविष्यवाणी की थी। लूका 12:1 से 12, लूका 21:12 से 19।

लेकिन नया समुदाय यहूदी विरोधी नहीं, वादाखिलाफी है। अधिनियमों में लगातार, नया समुदाय इज़राइल को आशा प्रदान करने के लिए बड़े जोखिम पर, लगातार आराधनालय में लौटता है। जैसा कि यीशु ने स्पष्ट किया था, इन शत्रुओं से प्रेम किया जाना चाहिए और उनके लिए प्रार्थना की जानी चाहिए।

ल्यूक 6:27 से 36, 23:34, अधिनियम 7:60। तनाव का स्रोत, कानून, ल्यूक के सुसमाचार और अधिनियमों में तनाव का प्राथमिक कारण, कानून के साथ नए समुदाय का संबंध है। लुकान अध्ययन में यह एक भारी बहस का क्षेत्र है।

कुछ लोगों का तर्क है कि ल्यूक कानून के प्रति अपने रवैये में बहुत रूढ़िवादी है। दूसरों का सुझाव है कि ल्यूक कानून के बारे में दुविधा में है। ल्यूक देखता है कि यहूदी ईसाई कानून का पालन कर रहे हैं जबकि अन्यजाति कुछ मामलों में स्वतंत्र हैं, खतना और दूसरों पर बाध्य हैं, मूर्तियाँ, मूर्तियों को चढ़ाया जाने वाला मांस और अनैतिकता।

अन्य लोगों का तर्क है कि कानून पुराने युग का हिस्सा है, और चर्च को धीरे-धीरे इसकी पहचान होने लगी। ब्लॉमबर्ग, 1984। अंतिम स्थिति सर्वोत्तम है।

इनमें से अधिकांश मामले अधिनियम 10:11, और 15, अध्याय 10, 11, और 15 में स्पष्ट किए गए हैं, हालाँकि ल्यूक 6:1 से 11, और 16:16 की चर्चाएँ भी प्रासंगिक हैं। कानून बाध्यकारी नहीं है, हालाँकि मिशनरी विचारों का मतलब है कि इसका पालन उन मामलों में किया जा सकता है जहाँ नए विश्वास के केंद्रीय मुद्दे दांव पर नहीं हैं। ल्यूक के जटिल दृष्टिकोण में, कानून को तीन अलग-अलग परिप्रेक्ष्यों में देखने की जरूरत है।

एक कानूनी, नंबर एक के रूप में, एक कानूनी और बलिदान संहिता के रूप में, और एक समाजशास्त्रीय विशिष्टता के रूप में, कानून समाप्त हो जाता है। ल्यूक 6:1 से 11, अधिनियम अध्याय 10, 11, और 15, जैसा कि भोजन नियमों, खतना और शायद सब्बाथ अभ्यास में बदलाव से प्रमाणित है। दो, राज्य की आशा की प्रतिज्ञा के रूप में, कानून पूरा हो गया है।

ल्यूक 16:16, 17, और 24:43 से 47। ईश्वर से प्रेम करने, अपने पड़ोसी से प्रेम करने और इसके नैतिक आदेशों के संबंध में अपने नैतिक जोर के साथ, कानून की उन तरीकों से पुष्टि की गई है जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के समानांतर हैं। ल्यूक 6:27 से 49, ल्यूक 10:25 से 47, ल्यूक 10:26, और 27, ल्यूक 16:19 से 31, ल्यूक 18:18 से 30।

कानून, या उससे जुड़ी परंपराएँ, सुसमाचार, विशेष रूप से सब्त के नियमों में जलन का एक केंद्रीय स्रोत हैं। ल्यूक 6:1 से 11. वास्तव में, यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि दाऊद ने सब्त के दिन जो किया, जो कि उसका न्यायसंगत उदाहरण है, कानून में इसकी अनुमति नहीं है, ल्यूक 6:4। यह महत्वपूर्ण है कि सब्त की चुनौती यीशु की उद्घोषणा के बाद आती है, कि नई शराब

नई मशकों में आनी चाहिए, और जो लोग पुराने को पसंद करते हैं वे नई कोशिश नहीं करेंगे, ल्यूक 5, 33 से 39।

यह टिप्पणी शुद्धिकरण से संबंधित परंपराओं का पालन करने में यीशु की विफलता के विवाद का हिस्सा है। यीशु ने कानून को चुनौती दी, कम से कम इस संदर्भ में कि इसे पहली शताब्दी में कैसे पढ़ा जाता था, और उनकी चुनौती ने उनके प्रति विरोध उत्पन्न करने में मदद की। अधिनियम इस चुनौती को स्पष्ट करते हैं।

सभी खाद्य पदार्थों को खोलना, अन्यजातियों के साथ संगति की पूरी मेज, और अन्यजातियों का खतना करने से इनकार, अधिनियम 10, 11, 15, कानून के कुछ तत्वों और उससे उत्पन्न परंपरा की अस्वीकृति को दर्शाता है। ल्यूक का स्पष्ट संकेत है कि सदस्यों पर सबसे पवित्र रीति-रिवाजों से इनकार करने का आरोप लगाया गया है और नए समुदाय के भीतर विरोध के उनके विवरण से पता चलता है कि यहूदी जड़ों से संबंधित मुद्दे जीवित हैं और समुदाय के भीतर भी जलन का स्रोत हैं। लूका 13:10 से 17 तक।

लूका 23:2. अधिनियम 6:11 और 13. अधिनियम 21:28. अधिनियम 25:8. ल्यूक ने उत्तर दिया कि कानून वादे की ओर इशारा करता है। लूका 24:43, 47. प्रेरितों 26:14. लूका 24:23.

वह कानून के संबंध में मतभेदों का भी खुलकर वर्णन करते हैं। तर्क यह है कि ईश्वर ने अन्यजातियों पर आत्मा उड़ेलकर इस नए समुदाय की स्वीकृति और कानून से इसकी भिन्नता का प्रमाण दिया, भले ही उनका खतना नहीं हुआ था। अधिनियम 11:15 से 18.

परमेश्वर नए मार्ग के प्रति अपना समर्थन एक दर्शन के माध्यम से दिखाता है जो खुली मेज पर संगति की आज्ञा देता है। प्रेरितों के काम 10:1 से 33. लूका शपथ लेने और नियमों के अन्य तत्वों को वैकल्पिक रूप में चित्रित करता है, जब तक कि कोई उन तत्वों को आवश्यक न बना दे।

प्रेरितों के काम 15:22 से 29, 21:17 से 26। ऐसे विकल्पों का प्रयोग कुछ अवसरों पर एकता को बढ़ावा दे सकता है। लूका का संकल्प है कि यहूदी ऐसे रीति-रिवाजों का पालन करने के लिए स्वतंत्र हैं, जब तक कि वे अन्यजातियों को ऐसा करने के लिए मजबूर न करें।

यह अंतर महत्वपूर्ण है और रोमियों 13 और 14 में पॉल के समाधान से अलग नहीं है। कानून को बाध्यकारी नहीं माना जा सकता। इस मुद्दे से निपटने वाले कई ग्रंथों और अधिनियमों से कुछ चिंताओं का पता चलता है, जिनका लूका ने इलाज किया था।

वे एक नस्लीय मिश्रित समुदाय की कल्पना करते हैं, जो प्राचीन जड़ों से अपने संबंधों के साथ संघर्ष कर रहा है। कोई भी संदेह कर सकता है कि इस तरह के नस्लीय मतभेद एक नए समुदाय में कितना तनाव बढ़ाते हैं। ल्यूक इन मतभेदों के बारे में और चर्च की एकता के लिए उत्पन्न जटिल समाधान और समझौते के बारे में ईमानदार है, एक समझौता जिसका वह अपने प्रस्ताव में समर्थन करता है।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 5 है, डेरेल बॉक ऑन थियोलॉजी, क्राइस्टोलॉजी, एंड साल्वेशन, द न्यू कम्युनिटी।